भगत रविदास – सबद ४

घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार ॥

रागु गउड़ी बैरागणि, भगत रविदास, गुरु ग्रंथ साहिब, ३४५

घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार ॥
रमईए सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥१॥
को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ जाइ रे ॥१॥ रहाउ ॥
हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥
मै राम नाम धनु लादिआ बिखु लादी संसारि ॥२॥
उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु ॥
मोहि जम डंडु न लागई तजीले सरब जंजाल ॥३॥
जैसा रंगु कसुमभ का तैसा इहु संसारु ॥
मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥४॥१॥

सार: आध्यात्मिक जागृति की यात्रा एक परिवर्तनकारी सफ़र है जिसके उतार-चढ़ाव को सहने के लिए दृढ़ मनोबल की आवश्यकता होती है। इसमें विचारों का आदान-प्रदान करना, अलग-अलग दृष्टिकोण प्राप्त करना, गहरे डर का सामना करना, सीमित मान्यताओं को त्यागना और अस्तित्व के सच्चे सार को समझना शामिल है। ठीक वैसे ही जैसे कोई व्यापारी दूर देशों में व्यापार यात्रा पर निकलता है, कठिन और अनिश्चित यात्रा के बावजूद, व्यापारी संभावित परिणामों से प्रेरित रहना सीखता है और जब सौदे लाभदायक साबित होते हैं तब वह जश्न मनाता है।

घट अवघट डूगर घणा इकु निरगुणु बैलु हमार ॥
ऊँची चोटियों और गहरी घाटियों वाले पहाड़ी रास्ते को पार करना बहुत कठिन है और मेरा साथ देने वाला एक बैल बेकार है। यह अनुभव दिखाता है कि जब हममें सकारात्मक गुणों की कमी होती है तब क्षणिक विचार हमारे जीवन की यात्रा को अधिक जटिल बना सकते हैं।

रमईए सिउ इक बेनती मेरी पूंजी राखु मुरारि ॥१॥
मैं सर्वव्यापी चेतना से विनम्र निवेदन करता हूँ कि मेरी संपत्ति की रक्षा करें। यह उस ज्ञान की तलाश का प्रतीक है जो जन्मजात सकारात्मक गुणों को बनाए रखता है। (१)

को बनजारो राम को मेरा टांडा लादिआ जाइ रे ॥१॥ रहाउ ॥
क्या कोई सहयात्री व्यापारी है जो सर्वव्यापी चेतना के एकत्व का व्यापार करने में रुचि रखता है? मेरे ज्ञान का माल व्यापार के लिए तैयार है क्योंकि मैं आध्यात्मिक विचारों का आदान-प्रदान करने की यात्रा पर निकल रहा हूँ। (१)(विराम)

हउ बनजारो राम को सहज करउ ब्यापारु ॥
मैं सर्वव्यापी एकता का व्यापारी हूँ, मैं शांति का व्यापार करता हूँ।

मै राम नाम धनु लादिआ बिखु लादी संसारि ॥२॥
मैंने अपने मन को सर्वव्यापी चेतना के सार के सराहनीय चिंतन से भर लिया है जबकि दुनिया बुरी इच्छाओं, इरादों के ज़हर से बोझिल है। (२)

उरवार पार के दानीआ लिखि लेहु आल पतालु ॥
इस किनारे और उस किनारे के ज्ञाता जो मूर्त, देखी हुई वास्तविकता और अमूर्त, अनदेखी चेतना का प्रतिनिधित्व करते हैं, आकाश से पाताल तक अस्तित्व का अनुभव करते हैं। यह अंतर्दृष्टि बताती है कि जीवन एक सहज निरंतरता है जहाँ दृश्य और अदृश्य क्षेत्र एक ही सत्य में विलीन हो जाते हैं जो एकता के सार का प्रतीक है।

मोहि जम डंडु न लागई तजीले सरब जंजाल ॥३॥
मोह का दंड उन्हें प्रभावित नहीं करता क्योंकि वह सभी मायावी उलझनों से मुक्त हो गए हैं। (३)

जैसा रंगु कसुमभ का तैसा इहु संसारु ॥
यह संसार कुसुम के पीले, अस्थायी रंग की तरह लेन-देन वाला है।

मेरे रमईए रंगु मजीठ का कहु रविदास चमार ॥४॥१॥
मेरे राम का रंग मजीठ जैसा है, कहते हैं रविदास चमार। (४)(१)

तत्त्व: भक्त रविदास सभी रूपों की अस्थिरता को कुसुम के फूल के फीके पड़ते रंग से तुलना करके समझाते हैं। वह कहते हैं कि एकमात्र स्थायी तत्व वह अनदेखी, सर्वव्यापी ऊर्जा है जो मजीठ के पौधे से रंगे रंग जैसी है। यह समझना ज़रूरी है कि सृष्टि में कोई भी चीज़ स्थायी नहीं है केवल बदलाव ही स्थायी है। यह मानने पर अड़े रहना कि चीजें सदैव रहेंगी, अंततः असंतोष, निराशा और दुख का कारण बनता है। जीवन की क्षणभंगुर प्रकृति को स्वीकार करने से अधिक आनंद, तृप्ति और संतुलन मिलता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com